

* श्रीहरिः *

ईसाईमतमर्दन

नवरत्न कमेटीके प्रेसीडेन्ट व हिंसय

सम्प्रदायके आचार्य भारतहितेच्छुक

दूदराजभक्त, प्रजाशुभचिन्तक,

विमलार्य्य वंशज

स्वर्गदासी

मिस्टर दलाकटानन्द सरस्वती

ने लोकोपकारार्थं बनाया ।

पञ्चमवार	}	सं० १९७४ वि०	{ मूल्य.) ॥
१०००		सन १९१७ ई०	

Printed by B. D. Misra at the Brahma
Press—Etawah.

ईसाई मत मर्दन ।



दोहा—ईसा को ईश्वर कहें ईसाई अज्ञान ।

सब पापिन को पाप ले ईसा दीनों मान ॥

लावनी रंगत खड़ी इंजील खण्डन ।

देखी सब इज्जील खूबसी पील नज़र में आई है ।

कोई न पढ़ना फन्दमें इनके जाली मत ईसाई है ॥८॥

मत्ती रचित इज्जील बाब दुसरेमें ये लिक्खा है कलाम ।

मुल्क यहूदाके भीतर एक बना है देखो बैतुल ढाँच ।

वहां एक रहता था यहूदी इसम था उस्ता की उभराम ।

थी उसके एक लड़की देखो लड़कीका था मरियमनामा ॥

शेर—था वही यूसुफ को बढ़ई नज़र लड़की पर पड़ी ।

चाह उस लड़की को पैदा हो गई दिल में बड़ी ॥

अदा उस के हुस्न की यूसुफ के दिल में आगड़ी ।

क्याह इसके संग कल ये फिक्र करता हर बड़ी ॥

शादी मरियम की यूसुफ सङ्ग हुई खबर ये पाई है ।

कोई न पढ़ना फन्दमें इनके जाली मत ईसाई है ॥९॥

हमल पेशतर से वो रहगया जबके सरियम थी कांरी ।
फिर आई यूसुफ के घरमें सुनी हकीकत अब सारी ॥
जो देखा यूसुफ ने हमल से लंगा फिकर करने भारी ।
अगर छोड़ूँ मैं इस को तो होवेगी बहुती खारी ॥
झर-फिर उड़ाई बात ये रुहउलकुदुस् का है फज़ल ।

पाक रु से रहगया सरियम के कायम वो हमल ॥
हमल जिसको रहगया तासीर से कर के दखल ।
पाक कैसे हम कहें उस रुह को देखो असल ॥
विना मद संग सोये औरत कहां से लड़का लाई है ।
कोई न पड़ना ॥ २ ॥

हमल दो ले सरियम घर आई जब यूसुफ का सुला भरम ।
हुआ बहुत शफसोत्त वो यूसुफ को पैदा हुआ रंजोअलम ॥
फिर आई तदजीर नज़र एक यूसुफ ने की तजके गम ।
लगा करन नशहूर सर्वोसे यूसुफ खा करके वो कसम ॥
झर-आज की अब वो फिराते ने खुदा के आन के ।
पाक जोरु है तेरी मुक्त से पाहा पहिचान के ॥
तू उसे घर में बुला ले बात मेरी मान के ।
कुछ जरूर इसमें नहीं रह साथ शेखी शान के ॥

करामात से जनेगी बच्चा कुदरत देख सुदाई है ।
कोई न करना ॥ ३ ॥

बिना तुलम कोई दरखत भी होता है मज़बूत नहीं ।
इसी तरह से औरत लड़का जन सकती वे मृत नहीं ॥
बिना मृत पैदा देखो बस हुआ कोई जिन भूत नहीं ।
तुम कहते वेमृत हुआ ईसा ये कोई साबूत नहीं ॥
शेर-है लिखा बैद्यकमें भी बिना बीज नहीं होता शजर ।

और हिकमत में लिखा है देख लो करके नज़र ।
और देखो डाक्टरों में है लिखा ये ही जिकर ।

बिना सोहगत सरदकी औरत जने कैसे पिसर ॥
जाल से मछुओं का देखी देखी गप्प उड़ाई है ।
कोई न मरना ॥ ४ ॥

फिर झुल्लू सरियन को लाया घर में अपने बुला शिताब ।
ताब फेर भूखों पर अपनी दिया रकीवाँकी ये जवाब ॥
भूले हो किस भरममें तुम सब होगे इन बातोंमें खराब ।
हमल रह गया सरियनके वो बिना तुलम कुदरत जनाब ॥
शेर-हो यकी इनको गया सुनकर फिरिस्तेकी जवान ।
जनेगी बच्चा करामाती ये सरियन नौ जवान ॥

उची पर फिरते हैं दीवाने येही वो लाकर इमान ।
 अकलको खो फरके अपनी झूठ करते हैं वयान ॥
 हैं झूठे ये सुनो बनावट की सब बात बनाई है ।
 कोई न पढ़ना ॥ ५ ॥
 है ये बनावट ईसा को बस खुदा ये फरके गाते हैं ।
 और वारिश भी खुदा का देखो ईसा को बतलाते हैं ॥
 खुदा उसे खुद कहें और उसका बाप खुदा समझाते हैं ।
 मगर नहीं परदादा उस का ये बातें फरमाते हैं ॥
 शेर-हैं नहीं चलते ये सीधी राह सच्ची जान के ।
 मानते ना हुक्म उस का शिष्य ये शैतान के ॥
 मानते ईसा को बेटा ये खुदा का मान के ।
 कब खुदा सोया था मरियमके कहो संग आनके ॥
 कौन से सनमें कहो खुदा की मरियम बनी लुगाई है ।
 कोई न पढ़ना फन्दमें इनके जाली मत ईसाई है ॥ ६ ॥
 खुदाको बाहिद सब कहते हैं नहिं उसके दादा न पिदर ।
 नहीं बचा न भाई कोई नहीं खुदा के है वो मदर ॥
 नहिं बेटों नहिं बेटा उस के ना जोहू ना बिरादर ।
 फिर बेटा किस तरह खुदाके हुआ कहो यह कौनसा घर ॥

शेर-यों तो बेटा सुन खुदा का सब सकल संसार है ।

है पिता वो जगत् का सब का करे उपकार है ॥

तुम कहो लड़का हुआ तो झूठ ये गुफार है ।

है न कोई तस्वीर उस की श्री न कोई आकार है ॥

वे नज़ीर है खुदा न उस की नज़ीर कोई पाई है ।

कोई न पड़ना ० ॥ ७ ॥

फरक है इन अन्धोंकी अकल में कियेको अपने पावेंगे ।

कुफर बोलते हैं ये जवां से नरक में डाले जावेंगे ॥

पकड़ फरिश्ते बांधके इन को दीज़ख में ले जावेंगे ।

खुरी कटारी सर पर इन के वो पत्थर बरसावेंगे ॥

शेर-है मत्ती इझील दुसरे बाव में देखो जरा ।

जब हुआ ईसा जवां शैतान के कबजे करा ॥

फिर सहे सदर्मे हजारों और देखो दुख भरा ।

बस मिला पानी नहीं श्री भूख के मारे मरा ॥

मिली न रोटी ईसा को और दारुण विपत उठाई है ।

कोई न पड़ना ० ॥ ८ ॥

बड़ी हंसी आती है सुनकर ईसाई जी सुनो जनाब ।

मरे खुदा होकरके भूखा श्री ना मिले पीनेको आब ॥

कैसा है वो खुदा जो खुद मौलाज बना रहता बेताब ।
नदद औरकी कब कर सकता इसका दीजे हमें जवाब ।
मेर-है बड़ा अफसोस सुनके और है हैरत कमाल ।

पादरी जितने हैं देखो है मेरा उन से सवाल ॥

जो करासाती था ईसा क्यों मरा कीजे रुयाल ।

क्रूस पर खींचा गया क्यों हाल वो करके बेहाल ॥

एली एली क्यों चिल्लाया भेली बिपत सवाई है ।

कोई न पड़ना ॥ ९ ॥

और हाल आगे सुन लीजे कान लगा ईसा का यार ।

करी बसर जिसतरहसे अपनी सम्पूरण सुनिये विस्तार ॥

कहींपै गाली कहींपै देखो पड़ी खूब घूसों की मार ।

कही घपत ईसा के सर पर जड़ी किसीने वेशुम्मार ॥

मेर-गये निकाले शहरसे कहीं करके वो खूबी जो खार ।

और कहिं कोई पड़े तन पर हुये वो बेकरार ॥

बस बजी ताली कहीं औ हंस रहे नर और नार ।

और कहीं खरपर किया ईसाको वो देखो सवार ॥

कहूं कहा तक जो जो खारी ईसा ने करवाई है ।

कोई न पड़ना ॥ १० ॥

अधजतरैका खुदा है इनका अजब है जिसकी शैकतशान ।
 ऐसे खुदापर फखर ये रखते दर २ करते फिरें वयान ॥
 ये कहते हैं पाप हमारे जितने थ सब की कर हान ॥
 सजा मसीने उठाई इनकी जरा हिलाई नहीं जवान ॥
 और-जब कि वो शैतान दुश्मन बस हमारा हो गया ।
 तो गुनाहों से भरा आलम वो सारा हो गया ॥
 फिर खुदा के रहम का सब पर नजारा हो गया ।
 और आलम में पिसर भेजा वो प्यारा हो गया ॥
 शिकममें रह नौ मास गिजा नापाक जो उसने खाई है ।
 कोई न बहना ॥ १९ ॥

बाहर निकला शिकमसे ईसा लगा वो करनेको तूफान ।
 अदल खुदा का किया वो पूरा आप देखो कुर्वान ॥
 है कैसा इन्साफ कहो ईसाई क्यों बनते नादान ।
 सरासरी वे अकली है ये सोच तो लीजें धरके ध्यान ॥
 और-गुनः तो कोई करे बस पांदरी जो सरबसर ।
 उस गुनःकी सजा पावे पिसर खालिक का मुकर ॥
 है लिखा कानून में बस जो करे जैसा बगर ।
 है सजा मिलती उसी को औ न दुसरे की मगर ॥

करे कोई और पावे कोई ये अन्धेर सवाई है ।

कोई न पढ़ना० ॥ १२ ॥

देखो ये अन्धेर भाइयो घोरी करे कोई इन्सान ।

उसकी सजा में देखो यारी खुदा मरे दे अपनी जान ॥

ऐसा अहमक खुदा है इनको जरातो अब लीजे पहिचान ।

जानका अपनी खुद दुश्मन थी कैसे लावे कोई इंसान ॥

शेर-अकल पर परदा पड़ा है वे अकल हैं वे अकल ।

है अदालत में वो जिसकी देख ले ऐसा अदल ॥

देखिये अब ये हिकायत अब जरा कीजे नजर ।

है करेबी मरू जिसमें वक्त भरा धिलकुल धो कल ॥

खुदा के ये जोरू बतलाते मत इनकी घौराई है ।

कोई न पढ़ना० ॥ १३ ॥

सिवाय इसके सुनिये साहब और भी बहुतरे हैं मुकाम ।

जहां लिख रखे कलाम ऐसे झूठनहीं कहताहूं मुदाम ॥

और सूत एक नौजवान था बात ये हैगी जाहिरआम ।

बहुत मेहरबी खुदाकी उसपर दोबेटी थी उसकीआम ॥

शेर-सूत जो करता इबादत था सवरे और शाम ।

जब हुई गालिबजी सोहबत फिर चढ़ा जाकरके काम ॥

पीके फिर देखो बरंही औ शराबों के वो जान ।
 फिर लगे करने वो अपनी बेटियों सेती हराम ॥
 आजब मुकद्दस किताब इनकी छलसे भरी भराई है ।
 कोई न पढ़ना० ॥ १४ ॥

औरहाल उस घरका सुनलो जिसमें कसीहकाथा औतार।
 किताब दुसरी सलातीन की बाब ये तिसरेमें इजहार।
 पुरखों में हजरत के ये दाऊद शाह बहुती हुशियार ।
 पिसर एक एमन था उनका जवांका था देखो तरार ॥
 और—बस वो एमन के हती हमशीर एक रश्के कमर ।

थी परी पैकर की सूरत पड़ी भाई की नज़र ॥
 बहिन पर भाई हुआ आशिक ये पाई है खबर ।
 हाथसे उसको पकड़ली पायके सूना वो घर ॥
 कुदृष्टि देखे बहिन की भाई जरा शरम नहिं-भाई है ।
 कोई न पढ़ना० ॥ १५ ॥

और बापकी उसके हकीकत सुनो भाइयो कान लगाय।
 जब आया जवानीका आलम घेरलिया फिर झुकनेआया॥
 एकदिन करने सैर वो हजरत शहरके अन्दर निकलेआया।
 लगे देखने इधर उधर की बेताबी से आंस लड़ाय ॥

शैर—बहुत थे बेताब हज़रत निगह जा छत पर पड़ी ।

एक परी पैकार से देखो नज़र हज़रत की लड़ी ॥

थी बज़ीर उनकेकी औरत जो थी कोठे पर खड़ी।

देख कर होगये आशिक दिलीज़ां से उस घड़ी ॥

काम ये खोटे करें पयम्बर बनके धूल उड़ाई है ।

कोई न पढ़ना० ॥ १६ ॥

फिर हज़रत करके मन्सूबा बज़ीर की बुलवा उसदम ।

करके बहाना जंगका उसको किया खाने देके हुस्न ॥

या वो बेगुनः बज़ीर उसका करवा हाला सीस कलम ।

औरत उसी को घरलाये देके हज़रत उसको दम ॥

शैर—करधियोंका वाब पंजुम बीस आयतमें ये जाल ।

देख लीजे है लिखा बस दूर कर दिलका नलाल ॥

एक पिन्हा जोड़ा शहाना औ गले मोतीकी माला।

बस बना जोरू उसे हज़रतने ली घरमें वो डाला॥

ऐसी हरकत कर बेजा फिर दिखलाते सच्चाई हैं ।

कोई न पढ़ना० ॥ १७ ॥

सुनी उन मसीहोंका हालजो मुल्फ़कर मिथ्यामें घेसरहंग ।

इसां के उनके देखो यारो सुनी सुनाता हूं मैं दंग ॥

अरम मुझे कहते आती है हाल यहां पर है ये ढंग ।
 थरज बहुत सी ऐसी शेखियां हैं इनकी ये हैं नतभंग ॥
 और-देख लो मजनुं मुकद्दस है रिसालों का भरा ।
 जिक्र इनकी पुस्तकों में बस रिसालों का भरा ॥
 हाल मैनीशी का है सब ढंग जालों का भरा ।
 हैं जो ऊपर से दो गोरे दिलके कालों का भरा ॥
 जिक्र दोगलों का किताब में हक की कहें बनाई है ।
 कोई न पढ़ना० ॥ १८ ॥
 शिकेमेनट एक ईसाइयों का देखो प्यारो है त्योहार ।
 सब से बुरा ईसाई उसमें करते हैं देखो व्योहार ॥
 अजबल तो ईसा का ये खाते हैं मांस खुश होकरयार ।
 फिर पी लेते खून को उस के ईसाई ऐसे मक्कार ॥
 और-गौर कीजे भाइयो अब इनके देखो प्यार को ।
 मांस ईसा का ये खाते मांस में दो बार को ॥
 बस कहीं होता है ऐसा देख लो संसार को ।
 नार के खा जायें अपने गुरू और मुस्तयार को ॥
 भंग भई मत ऐसी इन की कैसी चाल चलाई है ।
 कोई न पढ़ना० ॥ १९ ॥

क्या वो पड़ा खाने को बाकी काय तक खाये पावेंगे ।
 कितना बड़ा कद था ईसा का ईसाई बतलावेंगे ॥
 कितना लम्बा चौड़ा है नापेंगे पता लगावेंगे ।
 मांस खाये ईसा का ये हड्डी पर दांत जमावेंगे ॥
 शेर ॥ जो कोई पूछे तो कहते कुछ न ज़िजमानी है ये ।
 है जो ये खाना हमारा फकत रूहानी है ये ॥
 बस यही अरुसोस है निकले सुनो बानी है ये ।
 रूह कुत्ते की है इन की हमने पहिचानी है ये ॥
 नहीं ये करना रयां है तुमको नसिहत यही सिखाई है ।
 कोई न पड़ना ० ॥ २० ॥

तुम जो ईसा के तार्वं यारो देखो खा जाओगे ।
 फिर वो सिफारिशकी खातिर कहो किसके तार्वं लावोगे ॥
 कौन दिलावेगा नजात बस किस को पेश कराओगे ।
 सुनः वो अपने फिर देखो किसके सिर पर लदवाओगे ॥
 शेर ॥ छोड़ दो ईसाइयो सब बस ये क्या दस्तूर है ।
 कुफ़ ये एक किसम का बस सरासर भरपूर है ॥
 है जो गिरजा घर अखाड़ा इन्द्र का सशहूर है ।
 काय वो खाने खुदा ही बैठी जहां पर दूर है ॥

कहीं जड़ी तसवीर कहीं पर कुरसी नेज बिछाई है ।

कोई न पड़ना० ॥ २१ ॥

कहीं पलेट रखे हैं देखो कहीं रखे घम्मच नायाब ।

कहीं लवंगडरकी शीशी वो पड़ी हुई नहिं झूट जनाब ॥

कहीं पै मोड़े कहीं पे कुरसी और कहीं रखे असबाब ।

कहीं पे रम रखी है देखो कहीं बरन्दी रखी शराब ॥

धेर-हैं वो गुलदस्ते रखे और कुमकुमे भी नेज पर ।

लग रहे फानूस हांडी बस कहीं वो दर ब दर ॥

कारचोबी का कहीं कालीन वो समदा चुपर ।

सब तरह की खूबियां आती नजर देखो जिधर ॥

भो गातो हैं गजल होलियां लेडी ला, बैठाई है ।

कोई न पड़ना० ॥ २२ ॥

अगर पादरी खुशमिजाजही लगे वो दाजे वजन सिजल ।

लगीं लेडियां गाने देखो सिंध भैरवी और गजल ॥

राग रंगका समां सांध नखरे दिखलातीं नचल नचल ।

बानू जितने करके खुशामद बिठलाते हैं उछल उछला ॥

धेर-बख ये करती बख गरज से हैं तमाशे जो ये बख ।

फंस वो जावें जालमें कोई वो आकर किसी दय ॥
 जातुओं का हाल सुनिये भाइयो कहता हूं अब ।
 तेली तमोली गड़रिये जाबू बने वो बदुल कल ॥
 तनखाहों के लालच में इन लज्जा शरन गंवार्दे है ।
 कोई न पड़ना० ॥ २३ ॥

अमल ग्रहनशाली में जो कोई होते ये दीन इसलाम ।
 जब तक जीवें रोटी कपड़ा और निलते खरचनलो दान ॥
 अब जो ईसाई होते हैं खाने को नहिं मिलता ताम ।
 फिर दरबदर मारे २ भीख मांगते सुवा और शान ॥
 घर-भीरु भी निलती नहीं बस वो गये सब कार से ।
 है कटी पतलून पहने फिर रहे लाचार से ॥
 छूट जो सब से गये भाई लुटुम्व परिवार से ।
 हो गये विलकुल शालम देखो सभी घर द्वार से ॥
 समार कीरी और किरानी बना वो भंगी नाई है ।
 कोई न पड़ना० ॥ २४ ॥

अब अस्तुलि करता हूं उरकी परब्रह्म जो है करतार ।
 श्रीश मुक्तात हूं मैं उसको जनस्कार कर बारम्बार ॥
 है वो सकल पालन करता श्रीसबला बोही मुखतार ।

दोस्त और दुश्मनका भी पलमें करदेता है निस्तार ॥
 शेर-दाँद सूरज की उसी ने है किया रौशन बड़ा ।
 श्री सितारों से अजग है आसमां देखो जड़ा ॥
 की सुवत्तर जमी गुल से घर्ष वेदूनी खड़ा ।
 है वो आदिल और मुन्दर दुन्न है उंचका कड़ा ॥
 उसके न्यायकी कोश किसीसे दिलाती नहीं हिलाई है ।
 कोई न पड़ना ॥ २५ ॥

दयाली करके वेद अष्ट किये चार भागमें चार हैं वो ।
 भेद गुप्त देवों ने खोला सब के प्राण आधार हैं वो ॥
 रंक राय मुहताज हैं उसके करते जान निहार हैं वो ।
 पीर पयश्चर सारे श्रीलिया उस के तावेदार हैं वो ॥
 शेर ॥ हैं कितारें जाल की सब जाल का विस्तार है ।
 छोड़ राज की वेद मानो ये रचित करतार है ॥
 वन न कोई मुलज की विद्या न कोई गुलार है ।
 जो न भली वेद की पैतान वो मकतार है ॥
 कहीं बिलावट प्रभुदयाल की सही बात सुनाई है ।
 कोई न पड़ना फन्दसे इनके जाली मत ईसाई है ॥ २६ ॥